संरक्षक की कलम से

प्रिय पाठकों,

मुझे यह कहते हुए अत्यन्त हर्ष एवं गौरव की अनुभूति हो रही है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को समुचित बढ़ावा देने के दृष्टिकोण से विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित करता रहता है। संस्थान द्वारा पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन भी इन्हीं गतिविधियों में शामिल है। संस्थान का यह प्रयास रहता है कि प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के जरिए न केवल प्रशासनिक अपितु तकनीकी प्रकृति के कार्यों में भी राजभाषा हिन्दी का प्रयोग सुनिश्चित किया जाए। यद्यपि, हमारे संस्थान के कार्य तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रकृति के हैं और आमतौर से इन वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्यों में हिन्दी का अपेक्षानुरूप प्रयोग कर पाना काफी कठिन होता है, तथापि रा.ज.सं. अपने वैज्ञानिक क्रिया–कलापों में भी राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के प्रति कृतसंकल्प है।

संस्थान पिछले 17–18 वर्षों से ''प्रवाहिनी'' नामक हिन्दी वार्षिक गृह पत्रिका का निरन्तर एवं सफलतापूर्वक प्रकाशन करता आ रहा है। हमें विद्वान लेखकों के प्रेरणाप्रद लेख इस दिशा में उत्साहपूर्वक आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यद्यपि आज टी. वी. और इंटरनेट की चकाचौंध ने आम–आदमी का ध्यान पत्र–पत्रिकाओं तथा पुस्तकों से हटा दिया हैं, फिर भी हमारी यह कोशिश है कि सामान्य जनमानस को रोचक पत्र–पत्रिकाओं के अध्ययन की ओर आकर्षित व प्रोत्साहित किया जाए।

आज के युग में प्रत्येक स्थान पर जल सम्बन्धी बढ़ती समस्याओं से हमारा ध्यान इस और आकर्षित हुआ है कि हम एक और जल सम्बन्धी तकनीकी पत्रिका का प्रकाशन करें, जिसमें जल से जुड़े तकनीकी लेखों के साथ–साथ जन मानस से जुड़ी समस्याएं व उनके समाधान का भी समावेश किया जा सकें। अतः संस्थान ने गत वर्ष यह निर्णय लिया कि ''प्रवाहिनी'' पत्रिका के प्रकाशन के साथ–साथ हिन्दी में एक और ऐसी पत्रिका प्रकाशित की जाए जिसमें तकनीकी रिपोर्ट, समीक्षाएं, समाचार, वर्ग पहेली आदि का समुचित समावेश हो, जिससे तकनीकी एवं वैज्ञानिक कार्यों में भी राजभाषा हिन्दी को व्यापक प्रोत्साहन मिल सके। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए संस्थान ने सितम्बर 2011 में पाठकों की प्रतिक्रियाओं को जानने के दृष्टिकोण से ''जल चेतना'' नामक इस पत्रिका के परिचयात्मक संस्करण का प्रकाशन किया। पाठकों की उत्साहवर्धक एवं प्रेरणात्मक प्रतिक्रियाओं को देखकर संस्थान ''जल चेतना'' नामक तकनीकी पत्रिका का प्रथमांक जुलाई 2012 में प्रकाशित कर रहा है।

अतः ''जल चेतना'' पत्रिका का प्रथम अंक समस्त सुधी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है। आशा है कि यह अंक समस्त पाठकों को रूचिकर तथा उपयोगी लगेगा।

मैं उन समस्त प्रबुद्ध लेखकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका में प्रकाशनार्थ अपने रोचक एवं महत्वपूर्ण लेख भेजकर इसके प्रकाशन में अपेक्षित सहयोग दिया है। पत्रिका का सम्पादन मंडल भी हार्दिक बधाई का पात्र है।

मैं पत्रिका की अपार सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

राजेन्द्र सिंह

निदेशक

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान

National Institute of Hydrology

(जल संसाधन मंत्रालय के अधीन भारत सरकार की समिति)

(Government of India Society under Ministry of Water Resources)

जलविज्ञान भवन

Jalvigyan Bhawan

रुड़की – 247 667, भारत

Roorkee - 247 667, INDIA